एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गेंदा: भारतीय फूलों की खेती का अग्रणी चयन

(*डॉ. मनीष कुमार, डॉ. रागिनी भारद्वाज एवं डॉ. नितेश कौशल)
सहायक प्रोफेसर, लिंगया विद्यापीठ विश्वविद्यालय, फ़रीदाबाद, हरियाणा
*संवादी लेखक का ईमेल पता: manish1997sri@gmail.com

गेंदा, जिसे वैज्ञानिक रूप में टेगेटस के नाम से जाना जाता है, वनस्पति जगत के सबसे चमकीले और बहुमुखी फूलों में से एक है। यह अपनी चमकदार रंगत, सौंदर्य, सहनशीलता और अनेकों गुणों के लिए जाना जाता है तथा गेंदा बागानों, संस्कृतियों और यहां तक कि औषधीय उपचारों में एक विशेष स्थान रखता है। गेंदे के फूल अपनी आकर्षकता के कारण भारतीय किसानों में पहली पसंद बना हुआ है इसका प्रमुख कारण है की गेंदे की फसल का कम लागत तथा कम समय में तैयार होना साथ ही साथ उत्पादन का हाथों हाथ बाजार में बिक जाना जिससे किसान भाइयों को अधिक मुनाफा होता है। गेंदे का इतिहास इसके फूलों जितना ही समृद्ध और रंगीन है। गेंदा अमेरिकी महाद्वीप का मूल निवासी है और इसे 16वीं शताब्दी में स्पेनिश खोजकर्ताओं द्वारा पहली बार खोजा गया था। इसके बाद यह जल्दी ही यूरोप और एशिया में लोकप्रिय हो गया। ऐसा माना जाता है कि एज़्टेक सभ्यता ने गेंदे की खेती औषधीय, धार्मिक और सजावटी उद्देश्यों के लिए की थी। वास्तव में, "गेंदा" नाम (मैरी गोल्ड) से उत्पन्न हुआ है, जो ईसाई परंपरा में वर्जिन मेरी से संबंध रखता है, जो इस फूल के धार्मिक अनुष्ठानों में महत्व को दर्शाता है। भारत में गेंदे के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ अन्य नाम इस प्रकार है हैं जैसेकि, काल्था, गोल्ड ब्लूम, गार्डन मैरीगोल्ड, हॉलीगोल्ड, गोल्ड ब्लूम और मैरीबड इत्यादि।

गेंदे की खेती का महत्व

भारत एक धार्मिक और त्योहारों से समृद्ध देश है। इस देश की संस्कृति और समाज में गेंदे के फूल का महत्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों और शादी-विवाह में गेंदे का व्यापक उपयोग होता है। गेंदे के फूलों को मंदिरों में पूजा के दौरान भगवान की मूर्तियों को सजाने के लिए और विशेष अवसरों पर घरों और सार्वजनिक स्थलों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है। दीपावली, दशहरा, गणेश चतुर्थी और दुर्गा पूजा जैसे प्रमुख भारतीय त्योहारों में गेंदे के फूलों का उपयोग अत्यधिक होता है। इसके अलावा, शादी और अन्य सामाजिक समारोहों में भी गेंदे की मालाओं और सजावट का विशेष महत्व होता है।

आजकल के दौर में गेंदे के फूलों का महत्व केवल शादी-विवाह और मंदिरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उद्योग-धंधों में भी इसका उपयोग बढ़ गया है। जैसे कि गेंदे से गुलाल बनाना, उसके रंग का उपयोग करके कपड़ों को रंगना, मुर्गियों को सूखे गेंदे की पंखुड़ियां खिलाना ताकि उनके अंडे अत्यधिक पीले हों और

बाजार में अच्छी कीमत मिले। इसके पत्तों और फूलों से विभिन्न औषधियाँ और तेल बनाकर तथा प्राकृतिक कीटनाशक बनाकर अत्यधिक मुनाफा कमाया जा सकता है।

क्यों करें गेंदे की खेती से ही शुरुआत?

फूलों की खेती में जाने वाले किसान भाइयों को पहले गेंदे की खेती से शुरुआत करनी चाहिए। परंतु मन में यह सवाल उठता है कि गेंदे से ही क्यों करें शुरुआत? इसका प्रमुख कारण यह है कि गेंदा आसानी से लगने वाला पौधा है जिस पर वायुमंडल का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि यह एक ऐसा पौधा है जिसे कम पानी और अधिक ठंड अथवा गर्मी में भी आसानी से उगाया जा सकता है, और जिसके फूलों को उगाने के लिए न ही अत्यधिक प्रशिक्षण की जरूरत है और न ही अत्यधिक मेहनत की। यह अन्य फूलों की फसलों के तुलनात्मक रूप से कम रखरखाव वाली होती है, विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पनपती है और अन्य फसलों की तुलना में कम देखभाल की आवश्यकता रखती है। इसके अलावा, मैरीगोल्ड में प्राकृतिक कीट-प्रतिरोधक गुण होते हैं, जिससे रासायनिक कीटनाशकों की आवश्यकता कम हो जाती है और खेती का वातावरण अनुकूल बना रहता है। फसल चक्र में इसका उपयोग करने से मिट्टी की सेहत और उर्वरता में सुधार होता है और कीट और बीमारियों के चक्र को तोड़ा जा सकता है।

गेंदे के फूल की किस्म

गेंदे के फूल के उत्पादन के लिए गर्मी बरसात एवं सर्दी के मौसम में इस्तेमाल होने वाली कुछ महत्वपूर्ण किस्में कुछ इस प्रकार से हैं, सेराकोल गेंदा (लड्डू गेंदा), पूसा बसंती गेंदा, अर्का हनी, अर्का परी, अर्का विभा, अर्का शुभा,अर्का अग्नि, अर्का बंगारा, अर्का बंगारा-२, अर्का मधु, अर्का अभी, अर्का भानु, पूसा नारंगी गेंदा, पूसा बसंती गेंदा, पूसा अर्पिता, पंजाब गेंदा नंबर-१, रेड ब्रोकेड इत्यादि।

कैसे करें गेंदे की खेती?

गेंदे की खेती करने के लिए किसान भाइयों को कुछ बिन्दु पर ध्यान देना होगा जैसे गेंदा गर्म और आर्द्र जलवायु में 20-25°C तापमान पर अच्छी तरह से बढ़ता है और इसके लिए अच्छे जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच 6.0 से 7.0 के बीच होना चाहिए। गेंदे की खेती साल भर की जा सकती है तो हमेशा आने वाले त्योहार में फूल की उपयोगिता को ध्यान में रखकर खेती करें। क्यूंकि गेंदे के फूल की कीमत बाजार में घटती या बढ़ती रहती है यह निर्भर करती है बाजार में फूलों की मांग के ऊपर। हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों का चयन करें बीज हमेशा किसी विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञानं केंद्र या प्रमाणित दुकान से ही खरीदें। गेंदें के बीजों की पौधशाला जून-जुलाई, सितम्बर- नवंबर और फ़रवरी- से मार्च महीनों के दौरान तैयार की जाती है। पौध को तैयार होने में करीब करीब २५-३० दिनों का समय लगता है पौध तैयार होने के दौरान ही खेत की तैयारी कर लेना चहिये खेत की 2-3 बार जुताई करके और 10-15 टन गोबर की खाद मिलाकर तैयारी करें। पौध तैयार होने के बाद उसे खेत ३० × ३० पौध से पौध और पंक्ति से पंक्ति की दूरी में ४-५ सेंटीमीटर गहरे छोटे गड्ढे में प्रत्यारोपण करें और तुरंत हल्की सिंचाई करें और हर 7-10 दिनों में सिंचाई जारी रखें। करीब करीब २५-३० दिनों बाद गेंदें के पौधे में पिंचिंग प्रक्रिया को करें जिससे पौधों में शाखाओं का विकास होगा और पौध को मजबूती मिलेगी, पिंचिंग प्रक्रिया करने के २-३ दिनों के भीतर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की संतुलित मात्रा में उर्वरक दें जिसमे नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी करते हुए ही देदें तथा नाइट्रोजन आधी मात्रा के दो भाग बना लें एक भाग शीर्ष नोचन के २-३ दिन बाद दे तथा बची हुई मात्रा २२-२५ दिनों बाद दें। समय-समय पर निराई-गुड़ाई करके खेत को खरपतवार मुक्त रखें और फफूंदजनित

रोग और कीटों से बचाव के लिए जैविक और रासायनिक उपाय अपनाएं। नोचन प्रक्रिया के 30-35 दिनों बाद पौधों में कली का निर्माण शुरू हो जायेगा तथा फूल खिलने के 60-70 दिन बाद तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं, जिसे सुबह या शाम के समय किया जाना चाहिए। ताज़गी बनाए रखने के लिए फूलों को ठंडे स्थान पर रखें और उचित पैकेजिंग करें। गेंदे के पौधों में हर १२-१५ दिनों में फूल की तुड़ाई करने योग्य फूल तैयार हो जाते हैं जिससे किसान भाई ५-७ बार तक तुड़ाई करके उपज ले सकते है।

गेंदे की खेती में लगने वाले कुछ सामान्य रोग और कीट-मकोड़े एवं उनके रोकथाम

गेंदे की खेती में कुछ सामान्य रोग और कीट लग सकते हैं जो फसल को नुकसान पहुंचा सकते हैं। फफूंदजनित रोगों में (*अल्टरनेरिया ब्लाइट*)जोकि पत्तियों, तनों और फूलों पर काले धब्बे पैदा करता है, जिसे नियंत्रित करने के लिए मेंकोजेब या कार्बेंडाजिम का छिड़काव किया जा सकता है। पाउडरी मिल्ड्यू जोकि सफेद पाउडर जैसे धब्बे पत्तियों और तनों पर उत्पन्न करता है, इसके लिए सल्फर आधारित फफूंदनाशक का उपयोग करें। जीवाणुजनित रोगों में जीवाणु ब्लाइट जोकि पत्तियों और तनों पर पानी से भरे धब्बे उत्पन्न करता है, इसके लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें। विषाणुजनित रोगों में मोज़ेक वायरस जोकि पत्तियों पर पीले और हरे धब्बे उत्पन्न करता है, इससे बचाव के लिए रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट करें और रोग प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें। कीट-मकोड़ों में एफिड्स जोकि पत्तियों और तनों का रस चूसते हैं, जिससे पौधों का विकास रुक जाता है, इसके लिए नीम का तेल या इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें। थ्रिप्स पत्तियों और फूलों पर हमला करते हैं और नुकसान पहुंचाते हैं, इसके लिए स्पिनोसैड या फिप्रोनिल २ ग्राम/लीटर का उपयोग करें। कटवर्म तनों को काटते हैं और पौधों को गिरा देते हैं, इसके लिए क्लोरपायरीफॉस का उपयोग करें। माइट्स पत्तियों के नीचे रहकर रस चूसते हैं, जिससे पत्तियाँ पीली और सूखी हो जाती हैं, इसके लिए सल्फर या मिथाइल ऑयल का छिड़काव करें। रोग और कीट-मकोड़ों के प्रभावी नियंत्रण के लिए नियमित निरीक्षण और समय पर उपाय करना महत्वपूर्ण है, साथ ही जैविक और रासायनिक कीटनाशकों का उचित और संतुलित उपयोग करना चाहिए ताकि फसल को अधिकतम सुरक्षा मिल सके। ऊपर लिखी गयी सभी रोगों की या कीड़ेमकोड़े की रोकथाम दवाओं का इस्तेमाल १ लीटर पानी में १-२ ग्राम या मिलीग्राम दवा मिलाकर छिड़काव करें और हर १२-१५ दिनों के अंतराल पर करें तबतक करें जबतक रोग पर रोकथाम ना पा ली जाये या फिर अपने निकट किसी विश्वविद्यालय या कृषि विज्ञानं केंद्र पर पौधे के तने या फिर उसकी फोटो ले जाकर वैज्ञानिक से मिलें और उसके द्वारा सुझाई गयी दवाओं का इस्तेमाल करें ।

निष्कर्ष

गेंदे की खेती भारतीय कृषि में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो कम लागत, कम देखभाल और तेजी से उत्पादन के कारण किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय है। इसके धार्मिक, सामाजिक और औद्योगिक महत्व के साथ-साथ, गेंदे के फूल औषधीय और सजावटी उद्देश्यों के लिए भी उपयोग किए जाते हैं। गेंदे की खेती के लिए सही जलवायु, मिट्टी और फसल चक्र का पालन करने से इसका उत्पादन बेहतर होता है, जिससे किसानों को अधिक मुनाफा मिलता है। साथ ही, गेंदे के पौधों पर लगने वाले रोग और कीट-मकोड़ों से बचाव के लिए जैविक और रासायनिक उपायों का सही और संतुलित उपयोग करना जरूरी है। गेंदे की खेती न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह फसल चक्र को सुधारने और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करती है।

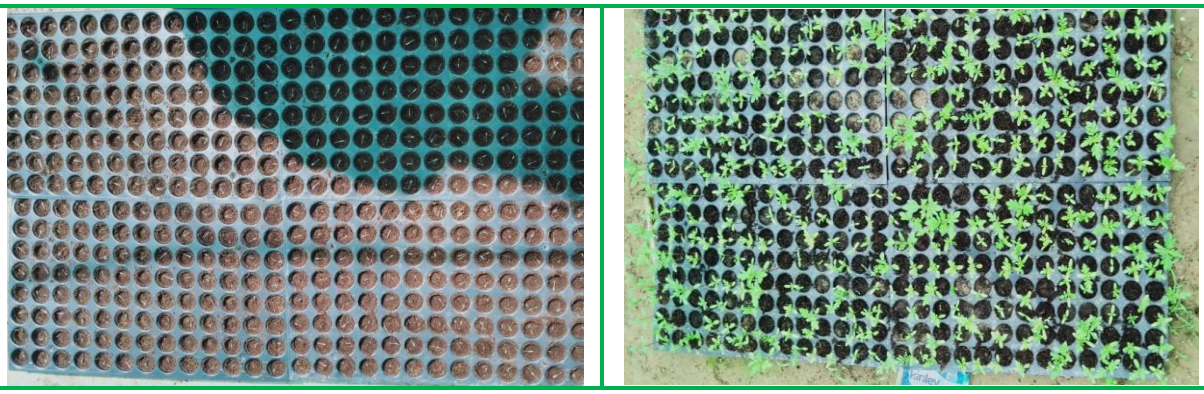

चित्र: - गेंदे का बीज और उसकी पौध को कोकोपीट मीडिया में उगाने की प्रक्रिया

चित्र: - खिले हुए गेंदे (गेंदा) के फूलों से भरा हरा-भरा खेत

चित्र: गेंदे का फूल